

Antahkarana and Cognition - Hindi Version.pdf

 Eternal University

Document Details

Submission ID

trn:oid::11424:153118834

Submission Date

Sep 28, 2026, 12:14 PM GMT+5:30

Download Date

Sep 28, 2026, 12:19 PM GMT+5:30

File Name

Antahkarana and Cognition - Hindi Version.pdf

File Size

898.6 KB

9 Pages

3,746 Words

13,373 Characters

11% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text
- Cited Text

Match Groups

-  **52 Not Cited or Quoted 11%**
Matches with neither in-text citation nor quotation marks
-  **0 Missing Quotations 0%**
Matches that are still very similar to source material
-  **0 Missing Citation 0%**
Matches that have quotation marks, but no in-text citation
-  **0 Cited and Quoted 0%**
Matches with in-text citation present, but no quotation marks

Top Sources

- 1%  Internet sources
- 1%  Publications
- 11%  Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Match Groups

- 52 Not Cited or Quoted 11%**
Matches with neither in-text citation nor quotation marks
- 0 Missing Quotations 0%**
Matches that are still very similar to source material
- 0 Missing Citation 0%**
Matches that have quotation marks, but no in-text citation
- 0 Cited and Quoted 0%**
Matches with in-text citation present, but no quotation marks

Top Sources

- 1% Internet sources
- 1% Publications
- 11% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1	Submitted works		
Savitribai Phule Pune University on 2017-04-13			<1%
2	Submitted works		
Central University of Gujarat on 2017-05-12			<1%
3	Submitted works		
Malaviya National Institute of Technology on 2020-02-17			<1%
4	Submitted works		
Pacific University on 2017-10-11			<1%
5	Submitted works		
University of Lucknow on 2026-08-08			<1%
6	Internet		
Inmuacin.in			<1%
7	Submitted works		
Pacific University on 2019-05-30			<1%
8	Submitted works		
ECPI College of Technology on 2024-12-28			<1%
9	Submitted works		
Lovely Professional University on 2021-06-04			<1%
10	Submitted works		
Pacific University on 2018-01-31			<1%

11	Submitted works	Universitas Dian Nuswantoro on 2024-02-16	<1%
12	Submitted works	Pacific University on 2017-09-26	<1%
13	Submitted works	Pacific University on 2017-10-12	<1%
14	Submitted works	Pacific University on 2017-08-26	<1%
15	Submitted works	Indira Gandhi University, Meerpur, Rewari-123401 (Haryana) on 2026-03-30	<1%
16	Submitted works	University of Rajasthan on 2020-02-17	<1%
17	Submitted works	Uttar Pradesh Technical University on 2020-07-29	<1%
18	Submitted works	Banaras Hindu University on 2020-10-05	<1%
19	Submitted works	Pacific University on 2018-05-24	<1%
20	Submitted works	ECPI College of Technology on 2024-12-08	<1%
21	Submitted works	Pacific University on 2017-11-06	<1%
22	Submitted works	Quaid-e-Azam University, Islamabad on 2026-02-22	<1%
23	Submitted works	Saint Leo University on 2023-10-17	<1%
24	Internet	uou.ac.in	<1%

25	Internet	www.drsohanrajtater.com	<1%
26	Internet	www.researchgate.net	<1%
27	Submitted works	Institute of Technology, Nirma University on 2023-06-24	<1%
28	Submitted works	Lovely Professional University on 2019-02-27	<1%
29	Submitted works	University of Minnesota System on 2026-09-06	<1%
30	Submitted works	Pacific University on 2018-01-09	<1%
31	Submitted works	Pacific University on 2018-08-07	<1%
32	Submitted works	University of Rajasthan on 2020-06-24	<1%
33	Submitted works	Pacific University on 2017-10-04	<1%
34	Submitted works	Banaras Hindu University on 2020-09-25	<1%

अन्तःकरण व संज्ञान : एक मनोवैज्ञानिक चिंतन (Antahkarana and Cognition : A Psychological Inquiry)

प्रो. एन.एल. मिश्र
अध्यक्ष, मनोविज्ञान
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, जिला—सतना (म.प्र.)
nandlalmishra11@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय वांगमय के 'अन्तःकरण' व आधुनिक मनोविज्ञान के 'संज्ञान' की अवधारणा से सम्बद्ध है। मानव व्यवहार की जटिलताओं को देखते हुये इसके विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया। व्यवहार के विविध प्रारूपों ने वर्तमान विषय पर सोचने को विवश किया। यह देखा गया है कि एक व्यक्ति बताये और सिखाये कार्य को भी ठीक से नहीं कर पाता और एक व्यक्ति बिना कुछ बताये अपनी बुद्धि के सदृश कृत्रिम बुद्धि (ए.आई.) को तैयार कर देता है। तो शून्य निष्पादन से लेकर स्पेस अनुसंधान तक विस्तारित मानव संज्ञान अथवा उसका अन्तःकरण कितनी असीमित ऊर्जा वाला होगा, यह एक विचारणीय मुद्दा है। इस तरह अन्तःकरण की शक्ति और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की गूढ़ता इस शोध विषय का केन्द्रीभूत तत्व है। दोनों सम्प्रत्ययों की साम्यता की सीमा और विभेद को भी समझने का प्रयास किया गया है। तंत्रिका—विज्ञान की भूमिका को खंगालने का कार्य हुआ है ताकि इनके अन्तर्सम्बन्धों को जाना जा सके। अन्ततः एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण का सुझाव भी इस शोध—पत्र की एक उपलब्धि है।

की—वर्ड्स— अन्तःकरण, संज्ञान, तंत्रिका—विज्ञान, कृत्रिम बुद्धि, समग्र मॉडल, समन्वयात्मक दृष्टि।

1. प्रस्तावना

आधुनिक मनोविज्ञान अन्तःकरण के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक तत्व 'बुद्धि' को अपने अध्ययनों में महत्वपूर्ण स्थान देता है, किन्तु शेष तत्वों पर प्रभावी बल नहीं देता। बुद्धि को मनोवैज्ञानिकों ने मापन योग्य पाया और उस पर कार्य किया किन्तु मन, चित्त और अहंकार पर विशेष कार्य नहीं हुआ। आधुनिक मनोवैज्ञानिक, मनोविज्ञान के लिये 'संज्ञान' (cognition) को ठीक वैसे ही महत्व दे रहे हैं जैसे भौतिक शास्त्रियों ने 'गॉड पार्टिकल' को महत्व दिया और

धीरे-धीरे वे उससे किनारा करते चले गये। मनोविज्ञान को समझने के लिये अन्तःकरण को समझना समीचीन है। यह भी समझना आवश्यक है कि संज्ञान और अन्तःकरण में क्या साम्यता और भेद है? या किसी स्तर पर ये दोनों सम्प्रत्यय एक ही हैं? यदि एक ही हैं तो फिर ये दोनों नामों से क्यों जाने जाते हैं। संज्ञान शुद्ध रूप से तंत्रिका-तंत्र का कार्य है। तो क्या अन्तःकरण का संबंध भी तंत्रिका-तंत्र से ही है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का समन्वित तंत्र ही अन्तःकरण के नाम से जाना जाता है। जबकि आधुनिक मनोविज्ञान संज्ञान (Cognition) को ध्यान, प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, अधिगम, तर्क, निर्णय तथा समस्या समाधान जैसी मानसिक प्रक्रियाओं का समन्वयन मानता है।

भारतीय अध्ययन परम्परा में अन्तःकरण को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। यह मात्र मानसिक प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं है, अपितु इन्हें आत्मा (चेतना) के उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। जबकि संज्ञान मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के रूप में स्वीकार्य है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन्हीं विविध पक्षों को लेकर अनुशीलन करने का प्रयास किया गया है। मनुष्य का हरेक अनुभव मानसिक प्रक्रिया से सम्बन्ध रखता है। भारतीय मनोविज्ञान और दर्शन इसे अन्तःकरण की विषयवस्तु मानते हैं। भगवद्गीता, योग, वेदांत, सांख्य और उपनिषद् अनुभव को अन्तःकरण के माध्यम से व्याख्यायित करते हैं। इसे ही केन्द्रीभूत साधन मानते हैं। इस शोध में यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि अन्तःकरण की संरचना क्या है? संज्ञानात्मक प्रक्रियायें अन्तःकरण से किस तरह जुड़ी हुई हैं। मनोविज्ञान को क्या अन्तःकरण अधिक स्पष्ट करता है और समग्र दृष्टि दे सकता है? इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

2. उद्देश्य

- संज्ञान क्या है तथा उसकी आधुनिक अवधारणा को समझना।
- अन्तःकरण किसे कहते हैं तथा अन्तःकरण की अवधारणा को विश्लेषित करना।
- उपरोक्त दोनों के आपसी सम्बन्धों को समझना।
- आधुनिक मनोविज्ञान और भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अन्तःकरण सिद्धान्त की समकालीन प्रासंगिकता को समझना।

3. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए गुणात्मक एवं दर्शनिक विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। चूँकि यह अनुसंधान सैद्धान्तिक है, इसलिए गुण-दोषों के आधार पर ही इसे समझने का प्रयास किया गया है। इसके लिये जिन प्राथमिक स्रोतों का सहारा लिया है, उनमें सांख्यकारिका, उपनिषद्, भगवद्गीता, वेदांत, योगसूत्र इत्यादि प्रमुख हैं। द्वितीयक स्रोत में भारतीय मनोविज्ञान पर हुये शोध, मनोविज्ञान के ग्रन्थ इत्यादि लिये गये हैं।

4. अन्तःकरण की अवधारणा

अन्तःकरण मानव के आन्तरिक उपकरण हैं जिनसे ज्ञान, अनुभव, स्मृति और निर्णय सम्पादित होते हैं। इनमें अपार सम्भावनायें छिपी होती हैं। मानव जीवन के लगभग समस्त व्यापार इन्हीं से संचालित होते हैं। यही शरीर का उपयोग भी करते हैं। अन्तःकरण में चार प्रमुख अंग हैं— मन, बुद्धि, चित्त, और अहंकार। अब इनका वर्णन करना आवश्यक है।

(अ) मन— मन अन्तःकरण का एक प्रमुख अंग है। यह स्वरूपरहित है पर उद्भूत क्षमता वाला है। यही अंग संकल्प—विकल्प करता है। इन्द्रियाँ, मन की समस्त सूचनायें उपलब्ध कराती हैं। इन्द्रियाँ ही मन की सूचनावाहक हैं। पर प्रश्न उठता है कि इस स्वरूपरहित मन का निवास स्थल कहाँ है? यह मस्तिष्क में रहता है या शरीर में कही अन्यत्र। इस पर एकमत उत्तर उपलब्ध नहीं है पर भारतीय ज्ञान परम्परा में इसका उत्तर देने का प्रयास हुआ है। शुक्ल यजुर्वेद के शिवसंकल्प सूक्त (अध्याय 34, मंत्र 1) में एक मंत्र आता है, जो निम्नवत् है—

सुसारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते अभिशुभिर्वाजिन इव।

हृत्प्रतिष्ठं यदाजं जविष्ठं तन्म मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

अच्छा सारथी घोड़ों का अपने नियंत्रण में रखता है, वैसे ही जो मन मानवों को अपने नियंत्रण में रखता है, जो हृदय में स्थित है, जो अजन्मा और अतिवेगवान है, मेरा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हों। इस तरह भारतीय वांगमय में मन का निवास स्थान हृदय स्थली को बताया गया है। मन के प्रमुख कार्य किसी बात पर ध्यान लगाना, सूचनाओं का अर्थ समझना, विकल्प निर्धारित करना तथा भावनाओं का प्रकटीकरण है। लेकिन यह भी कहा गया है कि—

मन एक मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। (ब्रह्मबिन्दूपनिषद्)

मनुष्य के बंधन एवं मोक्ष का कारण उसका मन ही है।

(ब) बुद्धि— बुद्धि प्राप्त सूचनाओं में से निर्णय करती है कि क्या सही है। इसके मुख्य कार्य तर्क, विचार, समस्या समाधान, निर्णय और सटीक उत्तर खोजना है। इसलिये इसे सारथी कहा गया है।

(स) चित्त— चित्त एक भण्डार है जिसमें मानव की समस्त स्मृतियाँ एवं संस्कार व्यवस्थित रहते हैं। अवचेतन के संस्कारों का संरक्षण भी यही होता है। समस्त प्रकार के अनुभव, सीख, स्मृतियाँ यहीं सुरक्षित रहती हैं। इस प्रकार मानव के व्यवहार की थाती भी इसको कहा जाता है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(द) अहंकार— मन, मस्तिष्क और शरीर को एकरूपता प्रदान कर समग्र रूप से यह कहना कि “मैं” और “मेरा”। अपनी पहचान बताना कि यह “मैं” हूँ। इसी से आत्म पहचान,

आत्म अवधारणा, स्वामित्व एवं व्यक्तित्व का एक ठोस रूप सामने आता है जिसे अहंकार नाम से अभिहित किया जाता है।

इस तरह अन्तःकरण के ये तत्व बाह्य संसार से सूचना एकत्र कर उस पर ठहरते हैं। ये चित्त में पहुँचते ही अपने संवर्ग वाले भाग में व्यवस्थित हो जाते हैं। बुद्धि उन पर विश्लेषण, तर्क-वितर्क कर उचित निर्णय लेती है। अहंकार उसे व्यक्तित्व संगठन से जोड़ता है जिससे कार्य को गति मिलती है। लगभग यही प्रक्रिया सूचना प्रक्रमण में होती है।

यह तो भारतीय परिप्रेक्ष्य का वर्णन रहा; जिसे अन्तःकरण कहा जाता है तथा भारतीय मनोविज्ञान का मूल तत्व है। अब आधुनिक मनोविज्ञान में इन्हीं प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास किया जायेगा जिसे संज्ञान (Cognition) का नाम दिया गया है।

5. संज्ञान (Cognition)

आजकल संज्ञान पर काफी बल दिया जाता है क्योंकि संज्ञान, मनुष्य के जीवन को व्यवस्थित रखने, क्रियाशील रखने, नवाचार में वृद्धि करने तथा सृजनशीलता के लिये महत्वपूर्ण अवयव है। इसके माध्यम से व्यक्ति बाह्य संसार में सूचनाओं को ग्रहण करता है। उनका विश्लेषण करता है। उसे अपनी स्मृति में जोड़ता है; तत्पश्चात् उस सूचना के लिये एक निर्णय लेता है; तदनुसार कार्य करता है। इस तरह संज्ञान विभिन्न तंत्रों से सूचना प्राप्त करके, उसे याददाश्त में सुरक्षित रखते हुये विचार चिंतन, मनन और विश्लेषण से एक निर्णय पर पहुँच कर अनुक्रिया व्यक्त करता है।

इससे सूचना संसाधन प्रणाली (Information Processing System) का निर्माण होता है और व्यक्ति उद्दीपन पर अपनी अनुक्रिया देता है। संज्ञान के अन्तर्गत संवेदना (Sensation), प्रत्यक्षीकरण (Perception), ध्यान (Attention), स्मृति (Memory), अधिगम (Learning), तर्क (Reasoning), निर्णय-निर्माण (Decision Making), समस्या-समाधान (Problem Solving), और भाषा (Language) प्रमुख रूप से आते हैं। इन प्रक्रियाओं में ज्ञानेन्द्रियों द्वारा उद्दीपक ग्रहण किये जाते हैं, प्रत्यक्षीकरण के अन्तर्गत उन उद्दीपकों अथवा सूचनाओं को अर्थ प्रदान किया जाता है। जब ध्यान की बात आती है तो ध्यान वहीं टिकता है, जहाँ प्रासंगिकता समझ में आती है। फिर स्मृति अपना कार्य करती है, जहाँ सूचनायें या ज्ञान या अनुभव संचित होता है, भण्डारित और संरक्षित होता है। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें पुनः स्मरित कि जाता है। जब ज्ञान या अनुभव स्मृति में अपने समान पूर्व में भण्डारित अनुभवों के साथ जुड़ जाता है तो एक नया अनुभव होता है, जिससे व्यक्ति उसको व्यवहार में लाता है, इसे अधिगम का नाम दिया जाता है। संज्ञान, उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है जो तर्क के नाम से जाना जाता है। मस्तिष्क में बहुत सारे विकल्प एक साथ

उत्पन्न होते हैं। उन विकल्पों में से शुद्ध या सही विकल्प का चुनाव निर्णय के नाम से जाना जाता है।

मानव के सामने समस्याएँ भी साथ-साथ चलती हैं। उनका समाधान करना आवश्यक होता है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिये उपयुक्त व्यपदेश अथवा रणनीति बनाना, समस्या-समाधान की प्रक्रिया है। चिंतन, मनन, तर्क-वितर्क करते समय मस्तिष्क में अनेकों विचार पैदा होते हैं; पर वे सभी भाषा में प्रकट नहीं होते; बल्कि वे उत्पन्न होते हैं और पानी के बुलबुले की तरह विनष्ट भी हो जाते हैं। जो विचार, चिंतन, मनन बाहर प्रकट करने होते हैं; उन्हें भाषा के माध्यम से लोगों के बीच प्रकट किया जाता है। जो विचार अभी तक मस्तिष्क के अन्दर थे, वे भाषा के माध्यम से लोगों में सम्प्रेषित हो जाते हैं। भाषा ही वह माध्यम है, जिससे चिन्तन मूर्त रूप लेता है। इस तरह संज्ञान की प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

इस शोध-पत्र में अन्तःकरण और संज्ञान की मौलिक प्रक्रिया को सरल रूप में समझने और जानने की कोशिश की गयी। अब यह प्रयास किया जायेगा कि अन्तःकरण और संज्ञान में घटने वाली घटनाओं में साम्यता क्या है और अन्तर क्या है? इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि ये दोनों अवधारणायें या रहस्य एक दूसरे से अलग हैं अथवा इनकी प्रक्रिया एक ही है और सिर्फ ये दो नामों से अलग-अलग जाने जाते हैं।

6. अन्तःकरण या संज्ञान की तुलना

जब हम इन दोनों अवधारणाओं को तर्क की कसौटी पर कसते हैं। तो पाते हैं कि इनमें साम्यता अधिक है, विरोध नहीं। कोई तथ्य ऐसा नहीं है, जो आधुनिक मनोविज्ञान में संज्ञान के नाम से अलग हो। अन्तर है तो बस इतना कि संज्ञान की समझ वैज्ञानिक होती जा रही है और वह प्रामाणिक रूप से परीक्षणीय बन रही है; जबकि अन्तःकरण की प्रक्रियायें गहरी और विशद् हैं। बुद्धि और अहंकार इन दोनों को प्रेक्षणीय और परीक्षणीय बनाकर मनोवैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है पर 'मन' और 'चित्त' अभी विज्ञान के दायरे में नहीं आ सके हैं। इस पर आगे और कार्य करना अपेक्षित है, तथापि भारतीय ऋषियों ने 'मन' और 'चित्त' को अपने सिद्धि से जिस तरह उनका वर्णन किया है उसकी काट मनोवैज्ञानिकों के पास नहीं है। आइये समझे कि अन्तःकरण के उपकरणों और संज्ञान की प्रक्रियाओं में क्या क्या साम्यता है—

अन्तःकरण के उपकरण	संज्ञानात्मक प्रक्रियायें
मन	प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, सूचना प्राप्ति एवं सूचना-प्रक्रमण
बुद्धि	तर्क एवं निर्णयन
चित्त	संस्कार, स्मृति, अनुभव
अहंकार	आत्म, आत्म सम्प्रत्यय, मैं, व्यक्तित्व, संगठन

3 इस तरह अन्तःकरण व संज्ञान तथा संज्ञानात्मक प्रक्रम में लगभग समान प्रक्रियायें सन्निहित हैं। मन और चित्त को भारतीय मनोविज्ञान में अधिक महत्व दिया गया है। यह मात्र इन्द्रियों से प्राप्त सूचना-संधारक नहीं है अपितु अष्टावक्र गीता में इसे सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जीवन लीला समाप्त होने के बाद भी आत्मा के साथ-साथ सूक्ष्म शरीर भी जाती है। सूक्ष्म शरीर जीव के संस्कारों को लेकर नये जन्म तक यात्रा करता है। इसमें 19 तत्त्व आते हैं- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कमेन्द्रियाँ, पंच प्राण (प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान), अन्तःकरण चतुष्टय। जबकि आधुनिक मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक पहलू शरीर के साथ नष्ट हो जाता है। 15 युंग ने 'सामूहिक-अचेतन' (Collective Unconscious) के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि सामूहिक-अचेतन में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार पड़े रहते हैं। इसका अर्थ है कि यह चेतना आत्मा के साथ-साथ यात्रा करती है अर्थात् संज्ञान के कुछ तत्त्व अगले जन्म में भी साथ रहते हैं और इससे पुनर्जन्म की भी पुष्टि होती है। 1

अब अगले क्रम में अन्तःकरण को तंत्रिका-विज्ञान (Neuro-Science) के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया जायेगा। 3

7. अन्तःकरण एवं तंत्रिका विज्ञान (Antahkaran & Neuroscience)

18 तंत्रिका-विज्ञान, मस्तिष्कीय संरचना पर अध्ययन-अध्यापन एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करता है, क्योंकि मस्तिष्क स्नायुकोशिकाओं के असंख्य जालों से निर्मित होता है। आधुनिक तंत्रिका वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के प्रमुख भागों में फ्रीफ्रंटल कार्टेक्स, हिप्पोकैम्पस, एमिग्डाला, डिफाल्ट मोड नेटवर्क को प्रमुख स्थान दिया है जिसके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं- योजना, तर्क निर्णय, विचार इत्यादि फ्रीफ्रंटल कार्टेक्स के प्रमुख कार्य हैं और यही कार्य बुद्धि का भी है। अतः तंत्रिका विज्ञान का सीधा सम्बन्ध संज्ञान और अन्तःकरण से है। इसी प्रकार हिप्पोकैम्पस का सम्बन्ध स्मृति से है। स्मृति, संज्ञान से भी जुड़ा है तथा अन्तःकरण के उपकरण चित्त से है। इस तरह हिप्पोकैम्पस और चित्त की अनुभूति आपस में सम्बद्ध है, जो स्मृति के क्षेत्र में कार्य करते हैं।

6 एमिग्डाला, भावनात्मक प्रक्रियाओं से सम्बद्ध है तथा भावना मानव-मन से सीधे जुड़ी होती है। अतएव एमिग्डाला, मन और भावनात्मक प्रतिक्रिया आपस में एक दूसरे के पर्याय हैं। डिफाल्ट मोड नेटवर्क, आत्म जागरूकता के लिये जिम्मेदार है और अन्तःकरण में अहंकार भी आत्म-सम्प्रत्यय और आत्म-जागरूकता से जुड़ा है। अतः कहा जा सकता है कि अन्तःकरण, संज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं तथा इनका प्रकार्यात्मक सम्बन्ध भी आपस में सम्बद्ध हैं। अन्तःकरण के ये चारों तत्त्व- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सिर्फ खोखली और आध्यात्मिक बातें भर नहीं हैं; अपितु इसका शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आधार भी है।

8. चेतना व अन्तःकरण (Consciousness and Antahkaran)

भारतीय दर्शन और भारतीय वांगमय चेतना को एक बेहद महत्वपूर्ण तत्त्व मानते हैं। यह चैतन्य है, शुद्ध है, स्वयं प्रकाशवान और साक्षी स्वरूप है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मूल आधार, सर्वव्यापी और स्वतंत्र सत्ता है। इसे आत्मा का स्वरूप, गुण या प्रकृति और पुरुष के सम्मिलन के रूप में जाना जाता है। पश्चिम वाले चेतना को मस्तिष्क की कार्य प्रणाली मानते हैं पर यह कोई भौतिक सत्ता न होकर एक शाश्वत एवं स्वप्रकाश तत्त्व है। चेतना के अविच्छिन्न प्रवाह को ही आत्मा कहा जाता है। इस तरह चेतना पूरे ब्रह्माण्ड के लिये एक जीवन तत्त्व है।

अन्तःकरण चेतना के उपकरण हैं, जैसे मान लिया जाय कि सूर्य चेतना है और दर्पण अन्तःकरण है। इससे जो प्रतिबिम्ब बनता है वह अनुभव है। उसी प्रकार चेतना के प्रकाश से मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पर जो प्रकाश पड़ता है, उससे निकला प्रतिबिम्ब अनुभव कहलाता है। चेतना का प्रतिबिम्ब जब अन्तःकरण में पड़ता है तो मन सोचता है, बुद्धि निर्णय करती है। सभी उपकरण अपना अपना कार्य कर पाते हैं। बिना चेतना के अन्तःकरण कार्य नहीं कर पाता। भारतीय अध्ययन पद्धति में चेतना को मूल तत्त्व माना गया है। अन्तःकरण को चेतना का उपकरण माना गया है तथा आत्मा के अस्तित्व को सर्वोपरि माना गया है। सबसे बड़ी बात विद्या के विस्तार की है, जिससे व्यक्ति, इंसान अथवा मानव बन पाता है। इसके ठीक विपरीत संज्ञानात्मक विकास में मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन को प्रमुखता दी जाती है। आत्मा सम्प्रत्यय पर कोई विचार ही नहीं होता, मात्र व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन को प्रमुखता दी जाती है। इससे यह आभासव मिलता है कि आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी तंत्रिका-वैज्ञानिकों की तरह मानव-मस्तिष्क की संरचना, प्रकार्य व घटित होने वाले व्यवहार का अध्ययन कर अपनी भूमिका का इति श्री कर लेना चाहते हैं। इससे क्या हम मानवीय रहस्यों को समझ सकते हैं? “ईश्वर अंश जीव अविनाशी” का क्या होगा। कैसे मानवीय रहस्य की गुत्थी सुलझेगी?

9. निष्कर्ष (Conclusion)

जब हम अन्तःकरण और संज्ञान की कार्य प्रणाली का अध्ययन करते हैं तथा इनके आपसी सम्बन्धों की बात करते हैं तो पाते हैं कि पाश्चात्य व आधुनिक मनोविज्ञान सतत इस प्रयास में रहता है कि मानवीय रहस्यों को वैज्ञानिक आधार मिले और मानव व्यवहार का कोई भी क्षेत्र प्रत्यक्ष से दूर न हो; जबकि भारतीय मनोविज्ञान इस बात पर बल देता है कि सिद्धियाँ और ज्ञान मन के नियन्त्रण पर आश्रित होते हैं। बड़ा से बड़ा ज्ञान तप और जप से भी प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा जो विश्व में सर्वाधिक समृद्ध है, वह स्वयं में इसका जीता-जागता उदाहरण है कि मानवीय रहस्य विज्ञान की क्षमता के दायरे से बाहर है और मानवीय क्षमतायें जो विज्ञान के आविष्कारों को चरम तक ले जाती हैं, वह चेतना के अस्तित्व से बड़ी नहीं हो सकती है। आधुनिक मनोविज्ञान प्रयोग और वैज्ञानिकता को ही अपने अध्ययन का आधार बनाते

हैं; जबकि भारतीय परम्परा ध्यान, आत्म-अनुभूति, योग और दार्शनिक विश्लेषण को ज्ञान के लिये आवश्यक और विश्वसनीय स्रोत मानती हैं।

आज के चेतना-अध्ययन (Consciousness Studies), तंत्रिका-विज्ञान (Neuroscience), संज्ञानात्मक विज्ञान (Cognitive Science) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के परिप्रेक्ष्य में अन्तःकरण की अवधारणा नये विमर्शों के लिए महत्वपूर्ण आधार दे सकती हैं। भारतीय मनोविज्ञान का अन्तःकरण मॉडल मात्र दार्शनिक सम्प्रत्यय नहीं है; बल्कि मानव संज्ञान, व्यक्तित्व, चेतना व व्यवहार को समझने का एक व्यापक आधार है। आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा के बीच संवाद स्थापित कर एक ऐसे समन्वित मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित किया जा सकता है; जो वैज्ञानिक भी हो और मानवीय अनुभव व अपार गहराई को भी अपने साथ ले चल सके।

भारतीय ज्ञान परम्परा में यह भी महत्वपूर्ण है कि जो कार्य बच्चे पैदा करने के लिये डॉक्टर 'टेस्ट-ट्यूब-बेबी' का प्रयोग करके अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं, उससे भी आगे का कार्य भारत में ऋषियों ने किया है। मात्र 'संकल्प सिद्धि', 'संदर्शन', 'स्पर्श' से सृष्टि की रचना कर चुके हैं। कुंती का पुत्र कर्ण, सूर्य के संदर्शन से ही जन्म लिया था। इस तरह अन्तःकरण और संज्ञान को लेकर एक नये क्षेत्र के विस्तार की आवश्यकता है जो दोनों में समानता को स्थापित कर सके तथा मन और चित्त की असीमित ऊर्जा को संज्ञान से जोड़ सके। यह एक समग्र मनोविज्ञान (Holistic Psychology) का रूप लेगा जो मानव व्यवहार को अन्दर व बाहर से समझने में सक्षम हो सकेगा।

सन्दर्भ-सूची

1. Aurobindo, S. (1990). The Life Divine. Sri Aurobindo Ashram
2. Bhagavad Gita. Gitapress, Gorakhpur.
3. Cornelissen, R.M., Mishra, G. & Varma, S. (Eds.) (2011). Foundations of Indian, Psychology (Vols.1-2), Pearson.
4. Dasgupta, S. (1975). A History of Indian Philosophy (Vol.1), Motilal Banarsidas.
5. Feuerstein, G. (2008). The Yoga Tradition, Hohm Press.
6. Matilal, B.K. (1986). Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge, Oxford University Press.
7. Mishra, G. & Mohanty, A.K. (Eds) (2002). Perspectives on Indigenous Psychology, Concept Publishing.
8. Patanjali. Yoga Sutra.

9. Radhakrishnan, S. (1996). Indian Philosophy (Vols.102). Oxford University Press.
10. Sternberg, R.J. & Sternberg, K. (2022). Cognitive Psychology (8th ed), Cengage.
11. Kathopanishad, Geeta Press, Gorakhpur.